

अव्यय एवं निपात

यह वे शब्द हैं जिनके रूप में लिंग, वचन, कारक इत्यादि के कारण कभी परिवर्तन नहीं होता। हिंदी व्याकरण में क्रिया विशेषण, समुच्चय बोधक, विस्मयादि बोधक, उपसर्ग, प्रत्यय और निपात, ये सभी अव्यय के अतर्गत माने जाते हैं। इसके अतिरिक्त सकारात्मक शब्द (हाँ, जी) और नकारात्मक शब्द (न, नहीं, मत) भी अव्यय कहे जाते हैं।

अव्यय शब्दों को किसी भी दशा में सदा एक रूप में ही रहने के कारण 'अविकारी' भी कहा जाता है। यहाँ पर 'अव्यय' के विभिन्न रूपों का संक्षेप में परिचय दिया जा रहा है।

2.1 क्रियाविशेषण

क्रिया की विशेषता को विविध रूपों में बताने वाले शब्द इस प्रकार हैं।

- (i) स्थान वाचक- यहाँ, वहाँ, जहाँ, कहाँ, दूर, पास, बाहर, भीतर ऊपर, सम्मुख, नीचे, आगे, पीछे आदि।

जैसे: वह यहाँ पढ़ता है।

तुम कहाँ जा रहे हो?

वह तुम्हारे पास बैठा है।

वे दोनों घर से बाहर निकले।

- (ii) दिशा सूचक- आगे, पीछे, सामने, इधर, उधर, कहाँ से, जहाँ से, दाहिने, बाएँ आदि।

जैसे: i इस पुस्तक को पीछे रख दो।

ii आप यहाँ से दाहिने जाएँ।

- (iii) समय सूचक- अब, जब, कब, तब, अभी, तब से, कब से, आज, कल, परसों, आजकल, सुबह, दिन में, रात में, सदा, सर्वदा, नित्य, बहुधा अक्सर, तुरंत, बार-बार, निरंतर, पुनः, फिर आदि।

जैसे: i अब आप लोग घर जाएँ।

ii तुम यह काम कब करोगे?

iii वह नित्य प्रातः पढ़ने आता है।

v तुम इसे तुरंत अस्पताल ले जाओ।

- (v) रीति/ढंग सूचक- कैसे, वैसे, यों, ज्यों, त्यों, कृपा पूर्वक, कृपया, पूर्णतया, साधारणतया, संभवतः दिल से, चुस्ती से, निस्संदेह आदि।